الدروس المهم
لعامة الأمة

الشيخ
عبد العزيز بن

साधारण मुस्लिम व्यक्तियों केलिए प्रमुख पाठ

लेखक
अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह इब्न बाज़

प्रकाशक
मकतब तौइयतुल जालियात नसीम
टेलीफून नं० 2328226–2350194–2350195
फैक्स नं०–2301465 पोस्ट–बौक्स नं०– 51584
रियाध – 11553 (सउदी अरब)

هندي
مسلم

الدروس المهمة لعامة الأمة

تأليف

سماحة الشيخ/ عبد العزيز بن عبد الله بن باز

ترجمة

محمد شريف بن شهاب الدين

تصحيح ومراجعة

محمد طاهر محمد حنيف

تشرف بإعداد هذا الكتاب وترجمته

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بسلطانة بالرياض

تحت اشراف وزارة الشئون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد - الرياض - شارع السويدي العام

ص.ب ٩٢٦٧٥ الرياض ١١٦٦٣

هاتف : ٤٢٤٠٠٧٧ - فاكس : ٤٢٥١٠٠٥

يسمح بطبع هذا الكتاب بإذن خطي مسبق من المكتب

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بسلطانــة، ١٤١٥هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية

إبن باز، عبد العزيز بن عبد الله
الدروس المهمة لعامة الأمة/ ترجمة محمد شريف بن شهاب الدين.
٣٢ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم
ردمك ٩ – ٦ – ٩٠٣٨ – ٩٩٦٠
(النص باللغة الهندية)
١. الإسلام – مبادىء عامة ٢. الثقافة الإسلامية
أ. إبن شهاب الدين، محمد شريف (مترجم) ب. العنوان

ديوي ٢١١ ١٥/٣١١٢

رقم الايداع : ١٥/٣١١٢
ردمك: ٩ – ٦ – ٩٠٣٨ – ٩٩٦٠

साधारण मुस्लिम व्यक्तियों के लिए प्रमुख पाठ

लेखक
शेख अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

अनुवादक
मुहम्मद शरीफ बिन मुहम्मद शिहाबुद्दीन

संशोधन एंव शुद्ध कर्ता
मुहम्मद ताहिर मुहम्मद हनीफ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करुणामय और दयावान है।

साधारण मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण पाठ

पाठ १

सूरा: फातिहा और सूरा: ज़िलज़ाल से लेकर सूरा: नास[1] तक में से जिस क़द्र हो सके छोटी सूरतें समझना और पढ़ाई ठीक करना कंठस्थ करना और उन बातों की व्याख्या करना जिनका समझना आवश्यक हो।

पाठ २

लाईलाहा इल्लल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स॰अ॰व॰) की उसके अर्थों और "लाईलाहा" की शर्तों की व्याख्या के साथ साक्षय देना।[2]

---

1 पवित्र क़ुरआन में कुल ११४ सूरतें हैं। पहली सूरत "सूरा: फ़ातिहा" और आख़री सूर: "सूरा: अननास" है।

2 इस बात की साक्षय देना कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद (स॰अ॰व॰) ईश दूत हैं।

इसका अर्थ यह है कि " लाईलाहा " उन सब खुदाओं की अस्वीकृति है जिन की अल्लाह को छोड़ कर पूजा की जाती है। और " ईल्लल्लाह " केवल एक अल्लाह की आराधना को मानना है जिसका कोई साझेदार नहीं ।

इस बात की साक्षय देना की अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद (स॰अ॰व॰) ईश दूत हैं।

लाईलाहा इल्लल्लाह की शर्तें

१- ज्ञान होना जो मूर्खता के विरूद्ध है।
२- विश्वास होना जो संदेह के विरूद्ध है।
३- निःस्वार्थता जो शिर्क के विरूद्ध है।
४- सत्य जो झूठ के विरूद्ध है।
५- प्रेम जो अपेक्षा के विरूद्ध है।
६- इताअत (आज्ञापालन) अवज्ञान के विरूद्ध है।
७- स्वीकृती जो अस्वीकृती के विरूद्ध है।
८- इन्कार, मतलब यह के उन खुदाओं को न मानना जिनकी अल्लाह के अतिरिक्त पूजा की जाती है।

पाठ ३

ईमान के स्तम्भ

१- अल्लाह पर ईमान लाना।

२- उसके फ़रिश्तों (देवदूतों) पर ईमान लाना।

३- उसकी पुस्तकों पर ईमान लाना।

४- उसके संदेश वाहकों पर ईमान लाना।

५- न्याय के दिन पर ईमान लाना।

६- तक़दीर (भाग्य) पर ईमान लाना, के भलाई बुराई अल्लाह की ओर से है।

पाठ ४

तौहीद (एकेश्वरवाद) के ३ भाग हैं

१- तौहीद रबूबियत सृष्टता, रचना आदि की एकेश्वरवाद।[1]

२- तौहीद उलूहियत और उपासना की एकेश्वरवाद।[2]

---

1 तौहीद, रबूबियत का अर्थ यह है कि एक अल्लाह ही को विश्व की सभी चीज़ों का उत्पादक करता और पालनहार मानना।

2 तौहीद उलूहियत।– केवल अल्लाह को पूजित और उपासना के योग्य मानना।

३- नामों और गुणों की एकेश्वरवाद।[1]

शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के भी ३ भाग हैं :

१- शिर्क अकबर।
२- शिर्क असग़र।
३- शिर्क ख़फी।

१- शिर्क अकबर का अर्थ है बहुत बड़ा शिर्क। यह शिर्क अच्छे कार्यों को अकारत कर देता है और नरक में हमेशा की सज़ा का कारण होता है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया

" और अगर कहीं वह लोग (पैग़म्बरों) शिर्क में पड़े होते तो उनके सभी कार्य अकारत हो जाते (सूर: अनआम -८६)

दूसरी जगह फरमाया :

" शिर्क करने वालों का यह काम नहीं के वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें जबकि वे स्वयं अपने ऊपर अधर्म के साक्षय हैं। यह वह लोग हैं जिनके सब कार्य अकारत गए और वे नरक में सदा रहेंगे।" (सूर: तौबा -१७)

और फिर जो व्यक्ति इस हालत (शिर्क) में मरेगा अल्लाह

---

1 नामों और गुणों की एकेश्वरवाद का अर्थ यह है कि उसके नामों और गुणों में किसी और को साझेदार न बनाना।

उसको क्षमा नहीं करेगा और उस पर स्वर्ग हराम (निषेध) है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया

" कोई संदेह नहीं कि अल्लाह इस बात को क्षमा नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उसके अतिरिक्त अन्य पाप जिसको चाहे क्षमा कर देता है। (सूर: अननिसा - ४८)

और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया

" इसमें कोई आशंका नहीं कि जो व्यक्ति अल्लाह के साथ शिर्क करे तो अल्लाह ने उस पर स्वर्ग वर्जित कर दिया है। और अत्याचारों का कोई सहायक नहीं।" (सूर: अलमाइदा - ७२)

मुर्दों और मूर्तियों को पुकारना और उन से सहायता चाहना और उनकी मन्नत माँगना और उनके लिए जानवर भेंट करना भी शिर्क का भाग है।

२- शिर्क असग़र वह है जिसका नाम से शिर्क होना पवित्र कुरान और पैग़म्बर (स•अ•व•) की हदीस से साबित हो। परन्तु शिर्क अकबर के भाग में से न हो। जैसे किसी कार्य को दिखावा और शोहरत के लिए करना, अल्लाह को छोड़कर अन्य चीज़ों की सौगंध खाना अथवा यह कहना जो अल्लाह चाहे और फलान चाहे आदि। अल्लाह के

पैग़म्बर (स॰अ॰व॰) ने कहा है :
" सबसे अधिक भयंकर बात जिससे मैं तुम्हारे लिए डरता हूँ वह शिर्क असग़र है। जब इस विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया वह " रयाकारी " (दिखावा) है।
इमाम अहमद और तबरानी और वेबहक़ी ने मेहमूद बिन लबीद अन्सारी (र॰अ॰) से विशिष्ट सूत्रों के साथ बयान किया है फिर नबी (स॰अ॰व॰) ने यह भी फ़रमाया:
" जिस ने अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की सौगंध खाई उसने शिर्क किया।"
इमाम अहमद ने इस प्रवचन को उमर बिन ख़त्ताब (र॰अ॰) से उचित सूत्रों के साथ बयान किया है। इस के सिवा अबु दाऊद और त्रिमज़ी ने नबी (स॰अ॰व॰) की हदीस को अब्दुल्लाह इब्ने उमर (र॰अ॰) से उचित सूत्रों के साथ बयान किया है। फिर आपने फरमाया :
" जिस व्यक्ति ने अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की सौगध खाई उसने कुफ़र (अल्लाह को न मानना) किया अथवा उसने शिर्क किया।
नबी (स॰अ॰व॰) की एक हदीस इस प्रकार है।
" तुम इस प्रकार मत कहो कि अल्लाह जो चाहे और फलाना जो चाहे , " बल्कि इस प्रकार कहो " जो अल्लाह चाहे फिर फलाना जो चाहे "। इस हदीस को अबू दाऊद ने हुज़ैफा बिन यमान (र॰अ॰) से शुद्ध पद्धती के साथ बयान

किया है , और शिर्क असग़र का यह भाग पूरी तरह इस्लाम से हट जाने और नरक में सदा रहने का कारण नहीं होता। परन्तु यह एकेश्वरवाद की पूर्णता के विरूद्ध है।

३- तीसरा भाग शिर्क ख़फी (छिपा हुआ शिर्क) है। इस विषय में पैग़म्बर (स॰अ॰व॰) का कथन है :
" क्या मैं तुम्हें न बताऊं वह बात जो मेरे पास तुम्हारे लिए मसीह दज्जाल से भी अधिक भयंकर है ? तो लोगों ने कहा क्यों नहीं ऐ अल्लाह के पैग़म्बर। तो आपने फरमाया वह " गुप्त शिर्क " है। मनुष्य नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो किसी व्यक्ति की दृष्टि अपनी ओर देख कर अपनी नमाज़ को सुन्दर बनाता है (संवारता है)।"
इस हदीस को इमाम अहमद ने अपनी मुस्नद में अबु सईद खुदरी (र॰अ॰) के सूत्र से बयान किया है।
वैसे शिर्क को केवल दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।
१- शिर्क अकबर (सबसे बड़ा शिर्क)।
२- शिर्क असग़र (बहुत छोटा शिर्क)।
गुप्त शिर्क इन दोनों में सम्मिलित है। जैसे मुनाफिकों का शिर्क , शिर्क अकबर में गिना जाता है। क्यों कि वे लोग अपने झूठे विश्वासों (अकीदों) को छिपाते और दिखावे के लिए और अपनी जान के डर से इस्लाम को स्पष्ट करते थे।

और रियाकारी (पाष्ढ़ता) शिर्क असग़र में गिना जाएगा। जैसा कि महमूद बिन लबीद अन्सारी (र०अ०) की हदीस में आया है।

" अल्लाह ही तौफीक़ (शक्ति) देने वाला है "।

पाठ ५

इस्लाम के स्तम्भ

१- इस बात की साक्षय देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य योग्य नहीं और मुहम्मद (स०अ०व०) अल्लाह के दूत (रसूल) हैं।

२- नमाज़ अदा करना।

३- ज़कात देना।[1]

४- रमज़ान माह के रोज़े (उपवास) रखना।

५- अल्लाह के धर का हज करना। (ऐसे व्यक्तियों के लिए जो उसकी यात्रा करने की शक्ति रखता हो)

[1] धनवान पर इस्लामी धर्मानुसार हर वर्ष के अंत में अपने धन का एक विशेष भाग ग़रीबों को देना फ़र्ज़ है।

पाठ ६

नमाज़ की शर्तें :

१- इस्लाम (मुसलमान होना)।

२- बुद्धि होना।

३- तमीज़ (विवेक - अच्छे बुरे की पहंचान होना)।

४- पाकी हासिल करना।

५- गंदगी दुर करना (मलिनता दुर करना)।

६- शर्म की जगह को छिपाना।

७- नमाज़ का समय होना।

८- किब्ले की ओर मुहं करना।

९- संकल्प करना।

पाठ ७

नमाज़ के कृत्य

१- शक्ति हो तो खड़ा होना।

२- तकबीर तहरीमा कहना (आरंभ में अल्लाहु अक्‌बर कहना)।

३- सूर: फातिहा पढ़ना।

४- रूकू करना।[1]

५- रूकू के बाद सीधा खड़ा होना।

६- सात अंगों पर सजदा करना।[2]

७- सजदे से सर उठाना।

८- दोनों सजदों के बीच बैठना।[3]

९- पूरे कार्य को संतोष के साथ करना।

१०- पूरे कार्य में अनुक्रम होना।

११- अंतिम क़ाअदा में अत्तहय्यात पढ़ना।

१२- "तशहहुद" के लिए बैठना।

१३- दरूद पढ़ना।

१४- दोनों ओर सलाम फेरना।

---

1 नमाज़ में सर और कमर झुका कर दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ने की अवस्था।

2 नमाज़ में अपना माथा धरती पर रखकर अल्लाह की तसबीह करना।

3 इस हालत को क़ौमह कहते हैं।

पाठ ८

नमाज़ के वाजिबात

१- तकबीरे तहरीमा के बाद की तमाम तकबीरें,।

२- इमाम और अकेले नमाज़ी का (سمع الله لمن حمده समिअल्लाह - लिमन हमिद:) कहना।

३- सब नमाज़ी का (ربنا ولك الحمد रब्बना व लकल हम्द) कहना।

४- रूकू में (سبحان ربي العظيم सुब्हान रब्बियल अज़ीम) कहना।

५- सजदे में (سبحان ربي الاعلى सुब्हान रब्बियल आला) कहना।

६- दोनों सजदें के बीच (ربي اغفرلي रब्बिग़ाफरली) कहना।

७- पहला तशहहुद।

८- तशहहुद के लिए बैठना।

पाठ ९

तशहहुद का बयान

التحيات لله والصلوا ت والطيبات ، السلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته ، السلام علينا وعلى عبادالله الصالحين ، اشهد أن لااله الا الله

واشهد ان محمدا عبده ورسوله

(अत्तहिय्यातु लिल्लाही वस्सलवातु वत्तैयिबातु अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू)।

<u>अनुवाद :</u> सारी प्रशंसाएं और नमाजें और पाक वस्तुऐं अल्लाह ही के लिए हैं, ऐ नबी (स॰अ॰व॰) आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर, मैं साक्षय देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं और साक्षय देता हूं कि मुहम्मद (स॰अ॰व॰) उसके दास और संदेश वाहक हैं।

और फिर यह दरूद पढ़ें :

اللهم صل على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد ، وبارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد .

(अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आली मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आली इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद व बारिक अला मुहम्मदिन व अला आली मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीम व अला आली इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद)

अनुवाद : ऐ अल्लाह मुहम्मद (स॰अ॰व॰) और मुहम्मद (स॰अ॰व॰) की संतान पर दरूद भेज जैसा कि तुने इब्राहीम पर और उसकी संतान पर दरूद भेजा है , नि:संदेह तु प्रशंसा योग्य और सम्मानित है। मुहम्मद (स॰अ॰व॰) और मुहम्मद (स॰अ॰व॰) की संतान पर विभुति उतार। जैसा के तुने इब्राहीम और इब्राहीम की संतान को विभुति दी नि:संदेह तु प्रशंसा योग्य और सम्मानित है।

फिर अंतिम तशहहुद में नरक और कब्र की सज़ा , जीवन एवं मौत की आपत्ती से और मसीह दज्जाल की आपत्ती से अल्लाह की पनाह मांगे फिर जो प्रार्थना करना चाहे करे और विषेश कर वह दुआ जो हदीस में आई है पढ़ें।

दुआ :

اللهم اعني على ذكرك وشكرك وحسن عبادتك ، اللهم اني ظلمت نفسي ظلما كثيرا ولايغفر الذنوب الا انت فاغفرلي مغفرة من عندك وارحمني انك انت الغفور الرحيم .

(अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक, अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लम्तु नफ़सी ज़ुलमन कसीरन वला यग़फिर ज़ुनूब इल्ला अन्तु फग़फिर ली मग़फिरतन मिन इनदिक वरहम्नी इन्नक अन्तल ग़फ़ूरूर्रहीम ।)

अनुवाद : ऐ अल्लाह अपनी याद और अपने धन्यवाद और

अपनी उत्तम आराधना के लिए मेरी सहायता कर ऐ अल्लाह। अपने प्राण पर मैंने अत्यंत अत्याचार किया है और तेरे सिवा कोई पापों को क्षमित नहीं करेगा तू अपनी कृपा से मुझ पर दया कर और निःसंदेह तू ही क्षमा करने वाला दयालु है।

पाठ १०

नमाज़ की सुन्नतें

उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

१- नमाज़ को दुआ से आरंभ करना।

२- खड़े होने की दशा में सीने के ऊपर सीधे हाथ की हथेली को बाऐं हाथ पर रखना।

३- पहली तकबीर, रूकू के समय, रूकू से सर उठाते समय और पहले तशहहुद से तीसरी रक्अत के लिए खड़े होने के समय दोनों हाथ उंगलियों को मिलाए हुऐ कन्धों तक अथवा कानों के बराबर तक उठाना।

४- रूकू और सजदे में तस्बीह (सुमिरिता) का एक से अधिक दफ़ा कहना।

५- दोनों सजदों के बीच एक से अधिक दफ़ा क्षमा की प्रार्थना करना।

६- रूकू में सर को पीठ के बराबर रखना।

७- सजदे में दोनों बाहों को दोनों बगलों से और पेट को

दोनों जांघों से दूर रखना।

८- सजदे में दोनों कुहनियों को ज़मीन से ऊपर उठाए रखना।

९- पहले तशहहुद और दोनों सजदों के बीच नमाज़ी का बाएं पैर पर बैठना और दाएं पैर को खड़ा रखना।

१०- अन्तिम तशहुद में तवर्रूक करना।[1]

११- पहले तशहहुद में दरूद पढ़ना।

१२- अंतिम तशहहुद में हदीस में आई हुई दुआ पढ़ना।

१३- फ़जर, मग़रिब और इशा की नमाज़ों की पहली और दूसरी रकअ़तों में कुरान आवाज़ से पढ़ना।

१४- ज़ोहर और असर की नमाज़ों में, मग़रिब की तीसरी रकअ़त और इशा की अंतिम दो रकअ़तों में कुरान बिना आवाज़ के पढ़ना।

१५- सूरः फातिहा के बाद कुरान की कुछ और आयतें पढ़ना।

इन के अतिरिक्त और जो भी सुन्नतें हैं उन को ध्यान में रखना।

---

1 तवर्रूक यह है कि नमाज़ी अन्तिम बैठक में बैठने के लिए सीधा पैर किबले की ओर करके खड़ा रखकर और उल्टे पैर को बिछाकर उस पर बैठ जाए।

पाठ ११

नमाज़ को तोड़ने वाली बातें

निम्न बातों से नमाज़ टूट जाती है :

१- नमाज़ में जान बूझ कर बात करना। परन्तु भूल चूक कर बिना जाने बात करने वाले की नमाज़ नही टूटती।

२- हंसना।

३- खाना।

४- पीना।

५- शर्मगाह (योनी) का खुल जाना।

६- किबले की ओर से बहुत पलट जाना।

७- नमाज़ में निरन्तर अनुचित कार्य करना।

८- वज़ू टूट जाना।

पाठ १२

वज़ू की शर्तें

१- इस्लाम - मुस्लिम होना।

२- बुद्धी होना।

३- तमीज़ (अच्छे बुरे की पहचान होना)।

४- नीयत (संकल्प) करना।

५- वज़ू के पूरा होने तक उसको तोड़ने का इरादा न करना

।

६- वज़ू के कारण का समाप्त हो जाना।

७- वज़ू से पहले पानी या मिट्टी आदि से पाकी हासिल करना।

८- पानी का पाक और जायज़ होना।

९- पानी के चमड़ी तक पहुंचने में अगर कोई रूकावट हो तो उसको दूर करना।

१०-ऐसे व्यक्ति के लिए नमाज़ का समय आरम्भ हो जाना जिसकी नापाकी सदा रहती हो।

पाठ १३

वज़ू के फर्ज़ (ईश्वरादिष्कर्म)

१- मुहं धोना जिसमें कुल्ली करना और नाक में पानी लेना सम्मिलित है।

२- दोनों हाथ कोहनियों तक धोना।

३- पूरे सर का कान के साथ मसह करना।[1]

४- दोनों पांव टखनों तक धोना।

५- ऊपर लिखे कार्यों का क्रमानुसार होना।

६- ऊपर लिखे कार्यों का लगातार होना।

---

[1] दोनों हाथों को पानी से भिगो कर पूरे सर पर फेरना।

पाठ १४

वज़ू को तोड़ने वाली चीजें

१- शर्मगाह की दोनों जगहों से निकलने वाली चीज़।

२- शरीर से निकलने वाली गंदगी।

३- होश चला जाना (नीद अथवा किसी और कारण से)।

४- अगली या पिछली योनी (शर्मगाह) को बिना किसी आड़ के हाथ से छु लेना।

५- ऊँट का मांस खाना।

६- इस्लाम से फिर (हट) जाना।

(अल्लाह हम सब को इनसे बचाए)

चेतावनी : सही बात यह है कि शव को स्नान देने के कारण वज़ू नही टूटता, क्योंकि उसका कोई सबूत नही है। बहुत से विदवानों का यही कथन है, परन्तु स्नान कराने वाले के हाथ शव की योनी को बिना आड़ के छु जाए तो उसको वज़ू करना आवश्यक होगा, इसी कारण उसके लिए अनिवार्य है कि वह बिना किसी आड़ के शव की योनी को हाथ न लगाए। इसी प्रकार किसी स्त्री को हाथ लगाने से वज़ू नही टूटता, चाहे भोगेच्छा से हो अथवा बिना भोगेच्छा से जब तक कि धात या पानी न निकले। इसलिए कि पैग़म्बर मुहम्मद (स॰अ॰व॰) ने अपनी एक पत्नी

को प्यार (चूमा) किया और नया वज़ू किए बिना नमाज़ पढ़ी।
सूर: निसा और सूर: माइदा के पद " अथवा तुमने स्त्रियों को छुआ हो " का अर्थ विद्वानों के कथन के अनुसार संभोग है। जैसा कि अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र०अ०) से वर्णन किया गया है।

पाठ १५

मुस्लमानों के लिए प्रमुख (इस्लामी) शिष्टाचार निम्नलिखित हैं

१- सत्यवादिता।
२- ईमानदारी।
३- पवित्रता।
४- शर्म और हया (लज्जा)।
५- वीरता (साहस या दिलेरी)।
६- दयालुता।
७- प्रतिज्ञा पालन।
८- हर उस चीज़ मे बचना जिसको अल्लाह ने निषिद्ध किया है।
९- पडोसी के साथ अच्छा व्यवहार।
१०- गरीबों की जहाँ तक हो सके सहायता करना।
११- वे पूरे सदाचार जिनका पवित्र कुरआन और हदीसों से

धार्मिक होना साबित हो।

पाठ १६

इस्लामी शिष्टाचार

उनमें से कुछ निम्न हैं

१- सलाम करना।

२- भेंट करते समय खुशी प्रकट करना।

३- सीधे हाथ से खाना - पीना।

४- घर अथवा मस्जिद में प्रवेश करते अथवा मस्जिद से निकलते समय अथवा यात्रा के समय इस्लामी शिष्टाचार अपनाना।

५- माता - पित अपने रिश्तेदार (स्वजन) , पड़ोसी, बड़ों और छोटों के साथ बरताव में इस्लामी नियमों का पालन करना।

६- किसी घर , बालजन्म अवसर पर बधाई देना।

७- दुखियों के साथ संवेदना प्रकट करना।

इन के सिवा भी दुसरे इस्लामी नियमों का पालन करना।

पाठ १७

शिर्क और पापों से बहुत बचना

उनमें से कुछ निम्न हैं :

(अ)

१- अल्लाह के साथ शिर्क करना।

२- जादू (माया कर्म)।

३- किसी की अनुचित हत्या करना जिस को अल्लाह ने हराम कर दिया हो।

४- अनाथ का माल खाना।

५- ब्याज लेना।

६- युद्ध के मैदान से भागना।

७- भोली - भाली पतिव्रता मोमिन स्त्रियों पर आरोप लगाना।

(ब)

१- माता - पिता का कहा न मानना।

२- स्वजनों के साथ दुराचार करना।

३- झूठी गवाही देना।

४- झूठी सौगंध खाना।

५- पड़ोसी को परेशान करना।

६- धन , जान , माल और प्रतिष्ठा के लिए लोगों पर अत्याचार करना।

इनके अतिरिक्त दूसरे पापों से बचना जिनको अल्लाह और उसके पैग़म्बर मुहम्मद (स॰अ॰व॰) ने मना किया है।

पाठ १८

जनाज़ा और जनाज़े की नमाज़ की तैयारी

१- जब किसी की मौत का विश्वास हो जाए तो उसकी आंखें मूंद दी जाएं और उसके दोनों जबड़े बांध दिए जाएं।

२- शव को स्नान कराते समय उसकी योनी को छिपा दिया जाए, शव को थोड़ा उठाया जाए और उसके पेट को आहिस्ता से दबाया जाए, फिर स्नान कराने वाला अपने हाथ पर कपड़ा अथवा उसी प्रकार की कोई चीज़ लपेट ले फिर उसकी गंदगी धोए। फिर नमाज़ का वज़ू कराए, फिर उसके सर और दाढ़ी को पानी और बेरी अथवा उसी प्रकार की किसी और चीज़ से धो डाले, फिर उसके दाएं और बाएं भाग को धोए, इसी प्रकार दूसरी और तीसरी दफा धोएं, हर दफा उसके पेट पर हाथ फेरें। यदि कोई चीज़ निकले तो उसे धो दें और उस जगह रूई आदि रख दें, यदि गंदगी न रूके तो निर्मल मुगुल मिट्टी अथवा नए औषधिक साधन जैसे टेप अथवा प्लास्टर आदि से बंद कर दें। और उसे दुबारा वज़ू कराएं और यदि तीन दफा से पाक न हो तो पाँच अथवा सात दफा धोएं। कपड़े से उसको सुखाएं और उसके जोड़ों और सजदे की जगह पर सुगंध लगाएं और यदि पूरे बदन पर सुगंध लगाएं तो अच्छा है। और उसके कफ़न को सुगंधित धूनी दी जाए और यदि उसके मूंछ और नाखून

लंबे हों तो उसे कतर दिए जाएं , परन्तु बालों में कंधी न की जाएं। स्त्री शव के बालों को तीन लटें बना कर पीछे छोड़ दिया जाए।

शव को कफ़न देना

उत्तम यह है कि पुरूष को तीन सफ़ेद कपड़ों में कफ़नाया जाए , उसमें कमीज़ और पगड़ी नही होगी। शव को इन कपड़ों में अच्छी तरह से लपेट दिया जाए और यदि उसको कमीज़ , तहबंद और चादर में कफ़नाया जाए तो कोई बात नही । स्त्री को पांच कपड़ों (कुर्ता , ओढ़नी , तहबंद और दो चादरें) में कफ़नाया जाए। छोटे बालक के शव को एक से लेकर तीन कपड़ों में कफ़नाया जा सकता है। छोटी बालिका के शव को एक कमीज़ और दो चादरों में कफ़नाया जाए।

शव को स्नान कराने , उसकी नमाज़ पढ़ाने और दफ़न करने का सबसे अधिक हक़दार वह पुरूष है जिसकी मरने वाले ने वसीयत की है , फिर पिता , फिर दादा , फिर नाते के अनुसार सबसे अधिक नज़दीक के रिश्तेदार।

स्त्री शव को स्नान कराने का सबसे अधिक हक़दार वह स्त्री है जिसकी मरने वाली ने वसीयत की है , फिर उसकी माता , फिर उसकी दादी , फिर उसके रिश्तेदारों में बहुत नज़दीक के रिश्ते की महिला है।

पति - पत्नी एक दूसरे को स्नान करा सकते हैं। जैसा कि

अबू बकर सिद्दीक (र०अ०) को उनकी पत्नी ने स्नान कराया और अली (र०अ०) ने अपनी पत्नी फ़ातिमा (र०अ०) को स्नान कराया।

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा

इब्ने अब्बास (र०अ०) से आई हुई सही हदीस के अनुसार नमाज़े जनाज़ा में चार तकबीरें कही जाएं। पहली तकबीर के बाद सूर: फ़ातिहा पढ़ी जाए और यदि उसके साथ कोई छोटी सूरत या एक - दो आयतें पढ़ लें तो अच्छा है, फिर दूसरी तकबीर कहें और पैग़म्बर (स०अ०व०) पर दरूद पढ़ें (नमाज़ वाला) फिर तीसरी तकबीर कहें और यह दुआ पढ़ें

<u>**दुआ :**</u>

اللهم اغفر لحينا وميتنا وشاهدنا وغائبنا وصغيرنا وكبيرنا وذكرنا وانثانا ، اللهم من أحييته منا فأحيه على الاسلام ومن توفيته منا فتوفه على الايمان ، اللهم اغفر له وارحمه وعافه واعف عنه ، واكرم نزله ووسع مدخله واغسله بالماء والثلج والبرد ، ونقه من الذنوب والخطايا كما ينقى الثوب الابيض من الدنس ، وأبدله دارا خيرا من داره وأهلا خيرا من أهله ، وأدخله الجنة ، وأعذه من عذاب القبر وعذاب النار وافسح له في قبره ونورله فيه ، اللهم لاتحرمنا أجره ولاتضلنا بعده

(अल्लाहुम्मग़फ़िर लेहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ायिबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उनषाना। अल्लाहुम्मा मन अहयैतहू मिन्ना फ़अहयिही अलल इस्लाम व मन तवफ़्फ़ेतहू मिन्ना फ़तवफ़्फ़हू अलल

ईमान। अल्लाहुम्म ग़फिर लहू वारहमहू व आफिही वआफ अनहू व अकरिम नुजुलुहू व वस्से मदखलहू वग़सिलहू बिलमाइ वस्सलजि वलबरदि व नक्किही मिनज़्ज़ुनु बि वलखतायाकमा युनक़्क़स्सोबु ल अब्यज़ मिन द्दनसि व अबदिलहू दारन खैरन मिन दारिही व अहलन खैरन मिन अहलिही व अदख़िलहुल जन्नत व अइज़हू मिन अज़ाबिलक़बरि व अज़ाबिन्नारी व अफ़सिह लहू फ़ी क़ब्रिही व नव्विरलहू फीही। अल्लाहुम्मा ला तहरिमना अजरहू वला तुज़्लिलना बादहू ।)

<u>अनुवाद :</u> ऐ अल्लाह हमारे जीवितों और मृतकों और हमारे उपस्थितों और अनुपस्थितों, हमारे छोटे - बड़ों और हमारे पुरूषों और हमारी नारियों को क्षमा कर दे, ऐ अल्लाह हम में से तू जिस को जीवित रखे उस को इस्लाम पर जीवित रख और जिस को मृत्यु दे उस को ईमान पर मृत्यु दे। ऐ अल्लाह उसे क्षमित कर दे और उस पर दया कर और उसको शान्ति दे उसको क्षमा कर दे और उसका अच्छा अतिथि सत्कार कर, उसकी कब्र को विशाल कर और उस को पानी, बरफ और ओलों से धो दे और उसके पापों और अशुद्धियों को पवित्र कर दे जैसा के सफ़ेद कपड़ा मैल कुचेल से पवित्र किया जाता है। और उसको घर के बदले अच्छा घर और परिवार के बदले अच्छा परिवार दे, उसको स्वर्ग में जगह दे और उसको कब्र के दण्ड से और नरक के

दण्ड से बचा , उसकी कब्र को विशाल कर और उसमें उसके लिए प्रकाश कर दे , ऐ अल्लाह हमें उसके पुण्य से वंचित न कर और उसके पीछे हमें गुमराह न कर।

फिर चौथी तकबीर कहें और अपने दाहिनी तरफ एक सलाम फेरें। उत्तम यह है कि हर तकबीर के समय अपने हाथ उठाएं और यदि स्त्री का शव हो तो कहा जाए (اللهم اغفرلها) , यदि दो शव हों तो कहा जाए(اللهم اغفر لهما)और यदि दो से अधिक शव हों तो बहुवचन पद उपयोग करें(اللهم اغفر لهم) और यदि शव छोटे बालक का हो तो क्षमा प्रार्थना(मग़फिरत की दुआ) के बदले में इस प्रकार कहें।

__दुआ :__

اللهم اجعله فرطا وذخرا لوالديه وشفيعا مجابا ، اللهم ثقل به موازينهما واعظم به اجورهما والحقه بصالح المومنين واجعله في كفالة ابراهيم عليه السلام وقـه برحمتك عذاب الجحيم .

(अल्लाहुम्म जअलहु फ़रतजु वज़खरनू लिवालिदेहि व शफ़ीअन मुजाबन। अल्लाहुम्मा सक्किल बिही मवज़िनिहुमा व आज़िम बिही उजूरहुमा व अलहिकहू बिसालिहिल मोमिनीन व अजअलहू फ़ी किफ़ालती इब्राहीम (अ॰स॰) वक़िही बिरहुमतिक अज़ाबल जहीम)

__अनुवाद:__ ऐ अल्लाह उसको अग्रगामी और अपने माता - पिता के लिए पूंजी करने वाला और ऐसा अभिसतावित

बना जिसकी अभिसताव को स्वीकार कर लिया गया हो, और उनके अच्छे कार्यों का पलड़ा इसके कारण बढ़ा दे इसके कारण उनका बदला अधिक कर दे और उसको सत्य कर्मी मोमिनों में सम्मिलित कर दे। और इब्राहीम (अ०स०) की किफ़ालत में दे दे। और उसको अपनी कृपा से नरक के दण्ड से मुक्ति दे।

सुन्नत यह है कि इमाम, पुरूष शव के सर के बराबर में खड़े हो और स्त्री के शव के बीच में, यदि बहुत से शव हों तो पुरूष का शव इमाम के क़रीब, और स्त्री का शव किब्ले की ओर, यदि उन के साथ बच्चे भी हों तो बच्चों के शव स्त्रियों से पहले और फिर स्त्री का और फिर बालिका का। बालक का सर पुरूष शव के सर के बराबर में हो। इसी प्रकार बालिका का सर स्त्री शव के सर के बराबर में हो और स्त्री की कमर पुरूष के सर के बराबर, इसी प्रकार बालिका की कमर पुरूष के सर के बराबर होगी। और सब नमाज़ी इमाम के पीछे खड़े हों परन्तु यदि नमाज़ी एक हो और इमाम के पीछे जगह न पा सके तो इमाम के दाएं ओर खड़ा होगा।

समाप्त

सारी प्रशंसा और धन्यवाद एक अल्लाह के लिए है जो एक है और दरूद और सलाम उसके नबी मुहम्मद और उनके सन्तान और उनके साथियों पर हो।

من إنجازات المكتب

قسم الجاليات

إسلام أكثر من ثلاثة آلاف شخص مابين رجل وامرأة

إقامة
١١ رحلة للحج
٢٧ رحلة للعمرة

تفطير أكثر من تسعة آلاف صائم في شهر رمضان.

إقامة ستة دروس مستمرة للجاليات بعدة لغات.

قسم الدعوة

طباعة العديد من الكتب والمطويات وتوزيع الأشرطة السمعية.

دعم المشاريع الدعوية والعلمية والتوعوية صلاحا للبلاد والعباد.

التنسيق المستمر للعلماء وطلبة العلم في المحاضرات والدورات العلمية والكلمات التوجيهية بشكل أسبوعي.

إقامة ١٣ درسا أسبوعيا في المساجد .

لطلب الكميات/ الإتصال بقسم الدعوة في المكتب

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالنسيم

الرياض - حي المنار- خلف مستشفى اليمامة

هاتف/ ٠١٢٣٥٠١٩٤ - ٠١٢٣٥٠١٩٥ فاكس/ ٠١٢٣٠١٤٦٥

رقم الحساب: ٤/٣٤١٠٠٣٩٠٠

مطبعة دار طيبة - الرياض - ت: ٤٢٨٣٨٤٠